

युद्ध स्मारक 1857 के वदिरोंह की कहानी बताता है

प्रलम्बिस के लयि:

1857 का वदिरोंह, वदिरोंह के नेता, कारण ।

मेन्स के लयि:

वदिरोंह के कारण और प्रभाव, सामूहिक भागीदारी की सीमा ।

चर्चा में क्यों?

1857 के वदिरोंह के दौरान ब्रिटिश पक्ष से लड़ने वालों को सम्मानित करने के लिये वर्ष 1863 में युद्ध स्मारक (नई दिल्ली) बनाया गया था, लेकिन आज़ादी के 25 साल बाद इसे उन भारतीयों की याद में फरि से समर्पित किया गया, जिन्होंने अंगरेज़ों से लड़ते हुए अपनी जान गँवाई थी ।

- स्मारक में अष्टकोणीय टॉवर के सभी कनारों पर धनुषाकार संगमरमर-समर्थित खँचे के साथ एक सामान्य गॉथिक डिज़ाइन है ।

1857 का वदिरोंह:

- वर्ष 1857-59 का भारतीय वदिरोंह गवर्नर जनरल कैनिंग के शासन के दौरान भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ एक व्यापक लेकिन असफल वदिरोंह था ।
- यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के सपिाहियों के वदिरोंह के रूप में शुरू हुआ, तथा इसने अंततः जनता की भागीदारी भी हासिल की ।
- वदिरोंह को कई नामों से जाना जाता है: सपिाही वदिरोंह (ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा), भारतीय वदिरोंह, महान वदिरोंह (भारतीय इतिहासकारों द्वारा), 1857 का वदिरोंह, भारतीय वदिरोंह और स्वतंत्रता का पहला युद्ध (वनियाक दामोदर सावरकर द्वारा) ।

कारण:

- तात्कालिक कारण:
 - चर्बी वाले कारतूस: 1857 का वदिरोंह नई एनफील्ड राइफलों के उपयोग से शुरू हुआ था, जिनके कारतूसों को गाय और सुअर की चर्बी के साथ चिकना किया जाता था, जिससे हट्टि और मुस्लिम सपिाहियों ने उनका उपयोग करने से इनकार कर दिया था ।
 - शकियातों का दमन: मंगल पांडे द्वारा बैरकपुर में कारतूस का उपयोग करने से इनकार करना और बाद में फाँसी, इसी तरह के इनकार के लिये मेरठ में 85 सैनिकों को कारावास देना, उन घटनाओं में से थे जिन्होंने भारत में 1857 के वदिरोंह को जन्म दिया था ।
- राजनीतिक कारण:
 - व्यपगत का सदिधांत: वदिरोंह के राजनीतिक कारण व्यपगत के सदिधांत और प्रत्यक्ष वलिय के माध्यम से वसितार की ब्रिटिश नीतित्थि ।
 - सतारा, नागपुर, झाँसी, जैतपुर, संबलपुर, उदयपुर और अवध के वलिय सहित भारतीय शासकों तथा प्रमुखों की संख्या को घटाने एवं वलिय ने वसितार की नीतिके खिलाफ असंतोष को बढ़ा दिया । इससे अभजित वर्ग के हज़ारों लोग, अधिकारी, अनुचर और सैनिक बेरोज़गार हो गए ।
- सामाजिक और धार्मिक कारण:
 - पश्चिमी सभ्यता का प्रसार: भारत में तेज़ी से फैलती पश्चिमी सभ्यता पूरे देश के लिये चिता का वषिय थी ।
 - 1850 में एक अधिनियम द्वारा वंशानुक्रम के हट्टि कानून को बदल दिया गया, जिससे एक हट्टि को अपनी पैतृक संपत्तियों को वरिासत में प्राप्त करने के लिये ईसाई धर्म में परिवर्तित होना पड़ता था, इसे भारतीयों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने के प्रयास के रूप में देखा गया ।
 - यहाँ तक कि रेलवे और टेलीग्राफ की शुरुआत को भी संदेह की दृष्टिसे देखा जाता था ।
 - रूढ़िवाद को चुनौती: सती और कन्या भ्रूण हत्या जैसी प्रथाओं का उनमूलन, पश्चिमी शकिका की शुरुआत और वधिया पुनर्विवाह को वैध बनाने वाले कानून को स्थापित सामाजिक संरचना के लिये खतरा माना गया ।

■ आर्थिक कारण:

- **भारी कर:** किसान और ज़मींदार दोनों भूमि पर भारी करों और राजस्व संग्रह के कड़े तरीकों से नाराज़ थे जिससे अक्सर पुश्तैनी भूमिका नुकसान होता था।
- **सपिहियों की शक़ायतें:** बड़ी संख्या में सपिही कृषक वर्ग से थे और गाँवों में उनके पारिवारिक संबंध थे, इसलिये किसानों की शक़ायतों ने भी उन्हें प्रभावित किया।
- **स्थानीय उद्योग और हस्तशिल्प का पतन:** इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के बाद भारत में ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं का आगमन हुआ, जिसने उद्योगों, विशेष रूप से भारत के कपड़ा उद्योग और हस्तशिल्प को समाप्त कर दिया।

■ सैन्य कारण:

- **असमान पारिश्रमिक:** भारत में 87% से अधिक ब्रिटिश सैनिक भारतीय थे, लेकिन उन्हें ब्रिटिश सैनिकों से कमतर माना जाता था और यूरोपीय समकक्षों की तुलना में कम भुगतान किया जाता था।
- **सुदूर क्षेत्रों में पोस्टिंग:** उन्हें अपने घरों से दूर और समुद्र पार के क्षेत्रों में सेवा करना आवश्यक था। कई लोगों ने समुद्र पार करने को जातगित नुकसान के रूप में देखा।

वदिरोह के नेता:

वदिरोह का स्थान	भारतीय नेता	ब्रिटिश अधिकारी जिन्होंने वदिरोह को दबा दिया
दिल्ली	बहादुर शाह द्वितीय	जॉन निकोलसन
लखनऊ	बेगम हजरत महल	हेनरी लॉरेंस
कानपुर	नाना साहेब	सर कॉलिन कैम्पबेल
झाँसी एवं ग्वालियर	लक्ष्मी बाई और तात्या टोपे	जनरल ह्यूरोज़
बरेली	खान बहादुर खान	सर कॉलिन कैम्पबेल
इलाहाबाद और बनारस	मौलवी लयिकत अली	करनल ओनसेल
बिहार	कृंवर सहि	विलियम टेलर

अंगरेज़ों की प्रतिक्रिया:

- 1857 का वदिरोह एक वर्ष से अधिक समय तक चला। इसे 1858 के मध्य तक दमनात्मक कार्रवाइयों के माध्यम से दबा दिया गया था।
- 8 जुलाई, 1858 को मेरठ में वदिरोह के चौदह माह बाद लॉर्ड कैनिंग द्वारा शांति की घोषणा की गई थी।

वदिरोह के वफिल होने का कारण:

- **सीमिति वदिरोह:** हालाँकि वदिरोह काफी व्यापक था, कति देश का एक बड़ा हिस्सा इससे अप्रभावित रहा।
 - दक्षिणी प्रांत और बड़ी रियासतें, हैदराबाद, मैसूर, त्रावणकोर और कश्मीर, साथ ही राजपूताना के छोटे राज्य वदिरोह में शामिल नहीं हुए।
- **प्रभावी नेतृत्व की कमी:** वदिरोहियों के पास एक प्रभावी नेता का अभाव था। यद्यपि नाना साहेब, तात्या टोपे और रानी लक्ष्मीबाई के रूप में वीर नेता थे, तथापि आंदोलन को प्रभावी समन्वयित नेतृत्व प्रदान नहीं कर सके।
- **सीमिति संसाधन:** वदिरोहियों के पास पुरुष और धन जैसे संसाधनों की कमी थी। दूसरी ओर, अंगरेज़ों को भारत में पुरुष, धन और हथियारों की नरिंतर आपूर्ति होती रही।
- **मध्य वर्ग की कोई भागीदारी नहीं:** अंगरेज़ी शक्ति मध्यम वर्ग, बंगाल के अमीर व्यापारियों एवं ज़मींदारों ने वदिरोह को दबाने में अंगरेज़ों की मदद की।

वदिरोह के प्रभाव:

- **ब्रिटिश क्राउन का प्रत्यक्ष शासन:** भारत सरकार अधिनियम, 1858 द्वारा भारत में कंपनी शासन को समाप्त कर दिया और इसे ब्रिटिश क्राउन के प्रत्यक्ष शासन के तहत लाया गया।
 - देश के शासन और प्रशासन को संभालने के लिये भारत में कार्यालय बनाया गया था।
- **धार्मिक सहिष्णुता:** भारत के रीति-रिवाज़ों और परंपराओं पर उचित ध्यान देने का वादा किया गया था। धार्मिक सुधारों के मामले में ब्रिटिश समर्थन पीछे हट गया।
- **प्रशासनिक परिवर्तन:** गवर्नर जनरल के कार्यालय को वायसराय द्वारा प्रतिस्थापित किया गया।
 - भारतीय शासकों के अधिकारों को मान्यता दी गई।
 - व्यपगत का सदिधांत समाप्त कर दिया गया।
 - कानूनी उत्तराधिकारी के रूप में पुत्र को गोद लेने का अधिकार स्वीकार किया गया।
- **सैन्य पुनर्गठन:** भारतीय सैनिकों के अनुपात में ब्रिटिश अधिकारियों में वृद्धि हुई लेकिन शस्त्रागार अंगरेज़ों के हाथ में रहा।

नषिकर्ष:

1857 का वदिरोह ब्रिटिश भारत में एक उल्लेखनीय घटना थी। अपने इच्छति उद्देश्य को पूरा करने में वफिल होने के बावजूकसने भारतीय राष्ट्रवाद की नीव रखी और समाज के वभिन्न वर्गों को संगठित करने में योगदान किया।

UPSC सविलि सेवा परीकषा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. महारानी वक्तिोरिया की उद्घोषणा (1858) का उद्देश्य क्या था? (2014)

- भारतीय राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में मलाने के कसि भी वचिर का परतियाग करना
- भारतीय प्रशासन को ब्रिटिश क्राउन के अंतरगत रखना
- भारत के साथ ईस्ट इंडिया कंपनी के वयापार का नयिमन करना

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- रयिसतों के डर को दूर करने और वदिरोही सपिहयिों के समर्थन समूह (अर्थात् असंतुष्ट रयिसतों के शासकों) समाप्त करने हेतु वर्ष 1858 की उद्घोषणा ने रयिसतों के संबंघ में ब्रिटिश स्थितिको स्पष्ट किया। इस उद्घोषणा ने भारतीय राज्यों को जोड़ने के कसि भी इरादे को शामिल नहीं किया। **अतः 1 सही है।**
- 1858 की उद्घोषणा ने ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर दया और भारतीय प्रशासन को ब्रिटिश क्राउन के अधीन कर दया। **कः 2 सही है।**
- उद्घोषणा ने अंगरेजी ईस्ट कंपनी के शासन को समाप्त करने और ब्रिटिश क्राउन (यानी, ब्रिटिश संसद) का प्रत्यक्ष नयितरण स्थापति करने की मांग की। **अतः 3 सही नहीं है।**

प्रश्न. भारत के इतहास के संदर्भ में "उलगुलान" अथवा महान उपद्रव नमिनलखिति में से कसि घटना का वविरण था? (2020)

- (a) 1857 का वदिरोह
(b) 1921 का मापला वदिरोह
(c) 1859-60 के नील वदिरोह
(d) 1899-1900 के बरिसा मुंडा का वदिरोह

उत्तर: (d)

व्याख्या:

- बरिसा मुंडा (1875-1900) का जन्म मुंडा जनजाति में हुआ था जो छोटानागपुर कषेत्र बंगाल प्रेसीडेंसी (वर्तमान झारखंड) में अवस्थति था। उन्हें अकसर 'धरती अबबा' या पृथवी पति के रूप में जाना जाता है।
- बरिसा मुंडा ने वदिरोह का नेतृत्व कयिा जसि उलगुलान (वदिरोह) या ब्रिटिश सरकार द्वारा थोपे गए सामंती राज्य व्यवस्था के खलिाफ मुंडा वदिरोह के रूप में जाना जाने लगा।
- **अतः वकिल्प (d) सही है।**

प्रश्न. यह स्पष्ट कीजयि कि 1857 का वपिलव कसि प्रकार औपनवशकि भारत के प्रतब्रिटिश नीतयिों के वकिसकर्म में एक महत्त्वपूर्ण ऐतहासकि मोड़ है। (मुख्य परीकषा, 2016)

प्रश्न. आयु, लगि और धर्म के बंधनों से मुक्त होकर भारतीय महलिाएँ भारत के स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी बनी रहीं वविचना कीजयि। (मुख्य परीकषा, 2013)

[स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस](#)

